0 2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी विशिष्ट

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 5-03-09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
T-1001	D

केन्द्र क्रमांक की सील

442056

पुस्तिका का ...ल क्रमांक K 3354424

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों मे)

1	9	4	4	2	7	1	2	5

...कालम में ऊपर दिये गये ...

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में ______ अंकों में ______

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 13 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

05-03-09

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम S. S. Tyagi पद Asst. Teacher.

पता/संस्था भारत कॉमर्स उ.मा.वि

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर-केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिक... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समा...

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य प...

परीक्षक क्रमांक 9240303 दिनांक 10.3.0...

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ के अंक

BSEMP

प्रश्न 1.

(i) मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य है।

(ii) स्वामी रामतीर्थ जापान गए थे।

(iii) शल्य चिकित्सा के प्रवर्तक सुश्रुत हैं।

(iv) 'मधुप की मधुर गुनगुन' से भौंरों का मधुर गान से आशय है।

(v) पुस्तकालय का संधि विच्छेद पुस्तक + आलय है।

प्रश्न 2.

(i) मीठे फल का आनन्द लेने वाला कौन है?

उत्तर → गूंगा।

(ii) 'पहली चूक' पाठ लेखक ने किस शैली में लिखा है

उत्तर → व्यंग्यात्मक शैली।

(iii) हवा से तेज चलने वाला कौन है?

उत्तर → मन।

(iv) खेती करने वाला कहलाता है –

उत्तर → कृषक।

(v) जिसके प्रत्येक चरण में 14 और 12 की यति पर 26 मात्राएँ होती हैं अन्त में लघु गुरु होता है उसे कहते हैं

उत्तर → गीतिका।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न 3 →

(i) नर्मदा का उद्गम स्थल अमरकंटक है। सत्य

(ii) 'जगदीश' शब्द में विसर्ग संधि है। असत्य

(iii) 'बादल को घिरते देखा है' नामक कविता के कवि तुलसीदास हैं। असत्य

(iv) 'शान्त रस' का स्थायी भाव 'निर्वेद' है। सत्य

(v) गेहूँ मनुष्य की भूख एवं शारीरिक आवश्कता का प्रतीक है। सत्य

प्रश्न 4 →

(i) भगिनी निवेदिता मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल

(ii) कोयल मधुर स्वर

(iii) सोलह कला का अवतार श्रीकृष्ण

(iv) प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो अन्योक्ति अलंकार

(v) देशभक्ति तत्पुरुष समास

प्रश्न 5 →

(i) जिस समास में कोई पद प्रधान न होकर किसी अन्य अर्थ का बोध कराता है उस समास का नाम लिखिए।

उत्तर – बहुव्रीहि समास

(ii) आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाओं को क्या कहते हैं?

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → अनुभाव ।

(iii) श्रावण की पूर्णिमा को कौन सा पर्व मनाया जाता है?

उत्तर → रक्षाबन्धन ।

(iv) गांधीजी द्वारा स्थापित आश्रम का नाम लिखिए।

उत्तर → सेवाग्राम ।

(v) बिना विचारे कार्य करने से क्या होता है?

उत्तर → बिना विचारे कार्य करने से बाद में पछताना पड़ता है, काम बिगड़ जाता है तथा जगहँसाई होती है।

ESEMP

प्रश्न 6 → श्री हरिवंशराय बच्चन कवि, चलने के पूर्व बटोही को निम्नलिखित बातों के लिए आगाह कर रहे हैं :-

1. कवि चलने के पूर्व पथिक को रास्ते की पहचान करने को कह रहा है।

2. वह आगाह कर रहा है इस रास्ते से संबंधित बातें किसी किताब में नहीं मिलेंगी और न ही इन्हें कोई बताएगा।

3. रास्ते में अनेक विघ्न बाधाएँ आएंगी जिनसे संघर्ष करना होगा।

4. कवि आगाह कर रहा है कि इन विघ्नों का पता पथिक को स्वयं ही यात्रा के दौरान चलेगा।

यो

कुल अंक

प्रश्न 7 → कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान वीरों के लिए इसप्रकार के बसंत का आयोजन करना चाहती हैं जिसमें एक तरफ तो कोकिला तान भर रही हो और दूसरी तरफ मारू बाजा बज रहा है हो। इसप्रकार रंग और रण का वातावरण बन रहा हो। वीर इन रंगिनीयों को छोड़कर युद्ध के लिए तत्पर हो जाते हैं बसन्त की रंगिनियाँ इन वीरों को रोकती नहीं हैं।

प्रश्न 8 → छायावाद की 2 विशेषताएँ :-

1. प्रकृति का मानवीकरण :- छायावाद में कवियों ने प्रकृति का मानवी-करण कर दिया है। सम्पूर्ण प्रकृति एक सुंदर नायिका के रूप में लग रही है।

2. अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम :- छायावाद में कवियों में अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम तथा जिज्ञासा की भावना दिखाई देती है। सम्पूर्ण मानव जगत मानव चेतना से स्पंदित दिखाई देता है।

छायावादी कवि	रचनाएँ
1. जयशंकर प्रसाद	कामायनी, झरना।
2. सुमित्रानन्दन पंत	पल्लव, वीणा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न 9. आत्मकथा व जीवनी में अन्तर

आत्मकथा	जीवनी
1. आत्मकथा में लेखक स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं एवं अनुभवों को प्रस्तुत करता है।	1. जीवनी में लेखक किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं पर अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से प्रकाश डालता है।
2. आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।	2. जबकि जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है।

आत्मकथा	रचनाकार
1. मेरी असफलताएँ	गुलाबराय

जीवनी	रचनाकार
1. कलम का सिपाही	अमृतराय

प्रश्न 10 → परम्परा तथा आधुनिकता की व्याख्या इसप्रकार है :—

परम्परा	आधुनिकता
1. खड़ा पैर परम्परा है	1. चलता पैर आधुनिकता है।
2. परम्परा यात्रा में पीछा छूटा अंतिम कदम है।	2. आधुनिकता यात्रा में आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है।
3. परम्परा एक से दूसरे को तथा दूसरे से तीसरे को दिया जाने वाला क्रम है।	3. अधुना अथवा इसवक्त जो कुछ भी है वह आधुनिक है।

B S E M P

का योग

4. मनुष्य ने जिन महनीय मूल्यों को प्राप्त किया वे अब परम्परा कहलाते हैं और ये मनुष्य के प्रयोजनों द्वारा कॅट-छॅट कर आधुनिकता बनाते हैं।	4. मनुष्य के द्वारा जिन महनीय मूल्यों को प्राप्त किया गया उन्हें नवीन संदर्भों में देखने की दृष्टि आधुनिकता है।

अत: परम्परा और आधुनिकता की तुलनात्मक व्याख्या करने पर यह ज्ञात होता है कि ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 11 → लेखक श्री हरिशंकर परसाई ने निंदकों को पास में रखने की सलाह दी है क्योंकि वे बिना पानी बिना साबुन के ही हमारे स्वभाव को निर्मल कर देते हैं। उनके पास रहने से हम कोई गलत कार्य भी नहीं करते हैं। ये निंदक साथ ही साथ हमारे दोषों का उद्घाटन समय समय पर करते रहते हैं। इनमें एकाग्रता, निमग्नता आदि गुण पाए जाते हैं। कहा भी गया है —

निंदक निअरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

प्रश्न 12 → (अ) महाकाव्य की परिभाषा :- महाकाव्य एक सम्बद्ध रचना होती है जिसमें किसी युग का सांगोपांग

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

य

चित्रण किया जाता है, पिंट वृहद् होता है तथा इसमें कम से कम 8 सर्ग होते हैं।

दो महाकाव्य — रचनाकार

1. रामचरितमानस — गोस्वामी तुलसीदास
2. कामायनी — जयशंकर प्रसाद

(ब) हे सारथे! - . . . . कर भड़े।

उपर्युक्त पंक्तियों में वीर रस है। इसका स्थायी भाव उत्साह है।

E S E M P

प्रश्न 13 → (अ)

(ख) मोहित फूल लाता है। (प्रश्नवाचक)

क्या मोहित फूल लाता है?

(क) माता पिता की सेवा करना चाहिए। (आज्ञावाचक)

माता पिता की सेवा करो।

(ब) (क) उत्तर → आज्ञावाचक वाक्य

(ख) उत्तर → निषेधात्मक वाक्य

(स) (क) उत्तर → दीर्घायु

(ख) उत्तर → वाचाल

प्रश्न 14 → (क) दो रचनाएँ

(ख) भाषा शैली

(ग) साहित्य में स्थान

वासुदेवशरण अग्रवाल

(क) दो रचनाएँ → 1. पृथ्वी पुत्र
2. कल्पवृक्ष ।

(ख) भाषा शैली →

भाषा → वासुदेवशरण अग्रवाल की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। भाषा सहज, सरल, बोधगम्य है परन्तु कहीं कहीं दुरूहता आ गई है। संस्कृत के शब्दों का प्रयोग बहुतायत में मिलता है।

शैली →

1. गवेषणात्मक शैली :– अतीत के चित्रों, पुरातत्व की वस्तुओं आदि के वर्णन में इन्होंने गवेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

2. उद्धरण शैली :– लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल जो कुछ कहते हैं उन्हें विविध आयामों से पुष्ट करते हैं। इसीलिए इन्होंने उद्धरण शैली का प्रयोग बहुतायत में किया है जैसे–

माता भूमिः, पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

3. भावात्मक शैली :– लेखक जहाँ भावुक हो जाते हैं वहाँ उनकी यह शैली बिखर जाती है। लेखक ने अपने हृदय पक्ष का वर्णन बड़े ही मनोहारी रूप में किया है।

BSEMP

(ग) साहित्य में स्थान :– अग्रवाल जी का हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अतीत के लेख तथा पुरातत्व से संबंधित लेख बहुत रोचक होते हैं।

प्रश्न 15 → सूरदास

(क) दो रचनाएँ :– 1. सूरसागर
2. सूर सारावली।

(ख) भावपक्ष एवं कलापक्ष →

भावपक्ष → 1. वात्सल्य वर्णन :– सूरदास ने वात्सल्य रस के दोनों पक्षों विरह और संयोग का मनोहारी चित्रण किया है।

2. श्रृंगार वर्णन :– सूरदासजी का श्रृंगार वर्णन सिद्ध है उन्होंने इसके भी दोनों पक्षों का वर्णन किया है।

3. भक्ति भावना :– सूरदास कृष्ण के भक्त थे। उनका श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भाव था। वे भक्ति को ही एक एकमात्र मुक्ति का साधन मानते थे।

कलापक्ष → 1. भाषा → सूरदास की भाषा साहित्यिक ब्रज भाषा है।

2. शैली :– सूरदास ने मुक्तक काव्य को अपनाया था और उनकी शैली गेय पद शैली थी।

B S E M P

योग

3\. अलंकार :— सूरदास ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का उपयोग किया है।

(7) साहित्य में स्थान :— सूरदास भक्तिकाल के अन्तर्गत सगुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि थे। इन्हें वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है। कहा भी गया है :—

'सूर-सूर, तुलसी ससि'।

B S E M P

प्रश्न 16 →

संकेत :— नीको लसत .... में आयो॥

संदर्भ :— प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'नवनीत' के प्रेम और सौन्दर्य नामक पाठ के अन्तर्गत प्रेम माधुरी नामक पाठ से लिया गया है जिसके कवि रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी हैं।

प्रसंग :— प्रस्तुत दोहे में श्रीकृष्ण के मुख के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :— कविवर बिहारी कहते हैं कि श्रीकृष्ण के ललाट पर लगा हुआ टीका अत्यंत सुंदर लग रहा है। यह टीका उनके मुख को सुशोभित कर रहा है। कवि कल्पना करते हैं कि श्रीकृष्ण का मुख चन्द्रमण्डल है तथा यह टीका सूर्य है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

यह टीका उनके मुखमण्डल की शोभा उसीप्रकार बढ़ा रहा है जिसप्रकार चन्द्रमण्डल में रवि (सूर्य) प्रवेश कर पूरे चन्द्रमण्डल की शोभा बढ़ा देता है।

विशेष :— 1. 'भरत जराय' तथा 'लसत लिलार' में अनुप्रास अलंकार बिखरा है।
2. उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 17. →

संकेत :— कृष्ण की . . . . असम्भव है।

संदर्भ :— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'नवनीत' के 'महापुरुष श्रीकृष्ण' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक श्री वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

प्रसंग :— प्रस्तुत गद्यांश में कृष्ण के युद्ध कौशल का महत्व अर्जुन, विष्णुगुप्त चाणक्य तथा धृतराष्ट्र स्वयं बता रहे हैं।

व्याख्या :— लेखक श्री वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं कि कृष्ण, राजनीति में पारंगत थे। अर्जुन ने एक तरफ कृष्ण की पूरी सेना तथा दूसरी ओर अकेले कृष्ण के होने पर कृष्ण को माँगा था क्योंकि उनका मानना था कि कृष्ण जिसके साथ होंगे विजय उसी को प्राप्त होगी। उसीप्रकार आर्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने भी कृष्ण

पृष्ठ के अंकों का योग

की राजनीतिक बुद्धि पर पूर्ण विश्वास था। उनका मानना था कि जहाँ कोई भी उपाय काम न कर रहा हो वहाँ कृष्ण ही एकमात्र सहारा होते हैं। शत्रु धृतराष्ट्र को भी यही मानना था कि जब तक अर्जुन, कृष्ण व अधिज्य गाण्डीव धनुष एकसाथ हैं तब तक कौरवों की ग्यारह अक्षोहिणी सेना तथा पाण्डवों की केवल सात अक्षोहिणी सेना होने के बावजूद भी पाण्डवों की ही विजय होगी तथा कौरवों की पराजय निश्चित है।

प्रश्न 18 →

(क) गद्यांश का सारांश :- प्रस्तुत गद्यांश में समय के सदुपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। समय के सदुपयोग से हम अधिक कार्य करके सच्चे अर्थों में मनुष्य बनते हैं। संसार में महापुरुष भी समय के महत्त्व को जानकर ही महापुरुष बने हैं।

(ख) 'समय का सदुपयोग' उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है।

(ग) समय का सदुपयोग करके अधिक कार्य करते हुए निरन्तर ऊँचे उठते हुए हम जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न 19 → अपने प्राचार्य को बुक बैंक से कक्षा दसवीं की समस्त पुस्तकें प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में,

श्रीयुत् प्राचार्य महोदय,
आदित्य बिरला उ॰मा॰ वि.,
बिरलाग्राम, नागदा जिला- उज्जैन (म.प्र.)।

विषय:- बुक-बैंक से पुस्तकें प्राप्त करने विषयक।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी एक निर्धन कृषक हैं तथा मेरे घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है। इसीलिए मैं अपनी पुस्तकें बाजार से खरीदने में असमर्थ हूँ। मैं पिछले वर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था।

अत: कृपया आप मुझे निम्नलिखित समस्त पुस्तकें बुक- बैंक से उपलब्ध करवाने की कृपा करें। मैं ये समस्त पुस्तकें सत्र के अन्त में पुन: जमा करवादूँगा।

हिन्दी (विशिष्ट)	कक्षा - 10
अंग्रेजी (सामान्य)	कक्षा - 10
संस्कृत (सामान्य)	कक्षा - 10
सा. विज्ञान	कक्षा - 10
विज्ञान	कक्षा - 10
गणित	कक्षा - 10

धन्यवाद

दिनांक 5-3-09

आपका आज्ञाकारी छात्र
अ ब स
कक्षा - 10वीं

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न 20 — निबंध

कम्प्यूटर और उसका महत्व

निबंध का अर्थ है 'भली प्रकार से बँधी हुई रचना'। निबंध में लेखक के दृष्टिकोण का प्रतिपादन होता है। यह गद्य रचना के रूप में लिखा जाता है।

रूपरेखा :— 1. प्रस्तावना
2. कम्प्यूटर का आविष्कार और विकास
4. कम्प्यूटर का महत्व
3. कम्प्यूटर क्या है ?
5. उपसंहार

प्रस्तावना :— आवश्यकता आविष्कार की जननी है। मनुष्य की आवश्यकताओं ने कई आविष्कार किए हैं। जब मनुष्य को गणनाएँ, प्रमाण आदि में परेशानियाँ आने लगी तब मनुष्य ने कम्प्यूटर का आविष्कार किया। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्व बढ़ता जा रहा है।

कम्प्यूटर का आविष्कार व विकास :— सन् 1000 में जापान में एक एबेकस नामक वस्तु का विकास किया गया जिसका उपयोग गणनाएँ करने के लिए किया जाता था। सन् 1643 में एक फ्रांसीसी नवयुवक ने एक ऐसी वस्तु का आविष्कार किया जो बड़ी ~~घटनाओं~~ गणनाओं

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

को मिनटों में हल कर देती थी। इसमें दो पहिए लगे हुए थे। इसे कम्प्यूटर नाम दिया गया।

परन्तु सन् 1868 में इंग्लैंड के गणितज्ञ ने आधुनिक कम्प्यूटर का आविष्कार किया। यह गणितियों गणनाओं, प्रसारण आदि के लिए उपयुक्त था। कम्प्यूटर के महत्त्व को देखते हुए सन् 1965 में भारत में भी कम्प्यूटर लाया गया।

कम्प्यूटर क्या है :— कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क है जिसमें पहले से आवश्यक उपकरण तथा डाटा डाल दिए जाते हैं। कम्प्यूटर गणनाओं को शीघ्र ही हल कर नेत्रपटल के सामने प्रस्तुत कर देता है।

कम्प्यूटर का महत्त्व :—

1. गणना के क्षेत्र में :— कम्प्यूटर की सहायता से बड़ी-बड़ी गणितीय गणनाएँ कुछ ही सेकण्डस में निकाल ली जाती हैं। गणना करने के लिए इसका महत्त्व सर्वाधिक है।

2. शिक्षा के क्षेत्र में :— शिक्षा को गुणवत्ता युक्त बनाने में कम्प्यूटर का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज कम्प्यूटर शिक्षा को शिक्षा पाठ्यक्रम

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

में भी शामिल कर लिया गया है।

3. आरक्षण के क्षेत्र में :– कम्प्यूटर की सहायता से घर बैठे ही रेलों, वायुयानों या फिर किसी अन्य प्रकार के आरक्षण आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

4. बैंकिंग :– बैंकिंग क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। वित्त संबंधी सभी समस्याओं को कम्प्यूटर द्वारा सुलझाया जाता है। इसकी मे मेमोरी बहुत अधिक होती है इसीलिए इसमें बड़े से बड़े आँकड़ों को संग्रहित कर लिए जाता हैं।

5. प्रसारण :– कम्प्यूटर में इन्टरनेट प्रणाली होती है। इसके द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा प्रसारण आसानी से किया जाता है।

6. प्रकाशन :– कम्प्यूटर का उपयोग सूचनाओं से संबंधित आँकड़ों के प्रकाशन के लिए किया जाता है।

7. वैज्ञानिक अंतरिक्ष खोज :– वैज्ञानिक अंतरिक्ष खोजों के क्षेत्र में कम्प्यूटर का विशेष महत्त्व है। अंतरिक्ष में जो

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग ५.१ ५.०

भी कुछ भेजा जाता है उसका संचालन पृथ्वी पर से कम्प्यूटर द्वारा ही किया जाता है।

उपसंहार :— आज कम्प्यूटर ने जहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति लाई है वहीं जीवन को पंगु भी बना दिया है इसीलिए हमें कम्प्यूटर का उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कम्प्यूटर सीखना वर्तमान युग की आवश्यकता है। अब वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक व्यक्ति के पास कम्प्यूटर होगा।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

20

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग